

# डॉ. नॉट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 5

## नीतिवचन 1-9 से मुख्य अंश

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या पाँच है, नीतिवचन 1-9 से मुख्य अंश।

नीतिवचन की बाइबिल पुस्तक पर व्याख्यान पाँच में आपका स्वागत है।

व्याख्यान पाँच में, हम कविता की व्याख्या की पद्धति के आधुनिक अध्ययन के कुछ प्रभावों का थोड़ा और पता लगाने जा रहे हैं, और यह नीतिवचन की पुस्तक की हमारी समझ को कैसे प्रभावित करता है, और फिर हम केवल एक केस स्टडी का उपयोग करेंगे।, अर्थात् नीतिवचन अध्याय तीन से, कविता की व्याख्या की विधि पर व्याख्यान पाँच के पहले भाग में हमने जो कुछ सीखा है उसे लागू करने के लिए। 21वीं सदी का पहला भाग, जब हम इन व्याख्यानों को रिकॉर्ड कर रहे हैं, बाइबिल की कविता के अध्ययन के लिए एक रोमांचक समय है। भाषा और साहित्य के विद्वानों ने कविता में रोमांचक नई अंतर्दृष्टि प्राप्त की है, और यही वह है जो मैं अब आपके साथ साझा करना चाहता हूँ।

आधुनिक भाषाविज्ञान और मैं कुछ शाखाओं का उल्लेख करूँगा और आधुनिक पद्धति की इन विभिन्न शाखाओं के बारे में कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करूँगा जो कविता की कल्पनाशील, कुशल व्याख्या में योगदान करती हैं। तो, इनमें से पहला आधुनिक भाषाविज्ञान हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे शब्द अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ प्राप्त करते हैं, और कैसे शब्द संयोजन ऐसे अर्थ पैदा करते हैं जो अलग-अलग हिस्सों के अर्थों के योग से कहीं अधिक होते हैं। यह हमें अस्पष्टता को एक झटके के बजाय एक संपत्ति के रूप में देखने में मदद करता है, जैसा कि मैंने पहले के व्याख्यानों में उल्लेख किया है।

हिब्रू कविता के आधुनिक विद्वानों ने हमें काव्य समानता के सरलीकृत विचारों को दूर करने और हिब्रू कविता की सुंदरता को फिर से खोजने में मदद की है, जिस पर हमने पहले के व्याख्यानों में से एक में भी ध्यान केंद्रित किया है। आधुनिक आलोचनात्मक सिद्धांत हमें परिचित पाठों से नए प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है, हमें उनकी आधुनिक प्रासंगिकता को फिर से खोजने के लिए आमंत्रित करता है, और हमें कविता के परिवर्तनकारी अर्थ के उत्पादन में सक्रिय भागीदार बनने के लिए सशक्त बनाता है। रूपकों का आधुनिक अध्ययन, और मैं आने वाले एक या दो व्याख्यानों में रूपकों के बारे में और भी बहुत कुछ बताऊँगा, रूपकों का आधुनिक अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि जटिल समस्याओं के बारे में बात करने के लिए हम जिन रूपकों का उपयोग करते हैं वे हमारी सोच और हमारे जीवन को कैसे आकार देते हैं।

आधुनिक व्याख्याशास्त्र हमें विनम्रता और अपेक्षा के साथ बाइबिल कविता पढ़ने में मदद करता है। वह प्रसिद्ध उद्धरण जिसे मैं दोहराता रहता हूँ, और मुझे आशा है कि आप इसे अपने जीवन के अंत तक याद रखेंगे, जो कल्पना के साथ लिखा गया है उसे कल्पना के साथ पढ़ा जाना चाहिए,

जैसा कि प्रसिद्ध स्पेनिश कैथोलिक विद्वान लुइस अलोंसो शॉकेल ने कहा है कहा करता था। तो फिर, कई मायनों में, हिब्रू कविता का अध्ययन अभी शुरू ही हुआ है।

हम मन के एक नए क्षेत्र में आ गए हैं जो हमारी खोज का इंतजार कर रहा है, एक ऐसा क्षेत्र जो व्याख्यात्मक कल्पना के लिए खुला है, जो हमें मन के एक रोमांचक साहसिक कार्य पर जाने के लिए आमंत्रित करता है जो हमारे जीवन, हमारे राजनीतिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को बदल सकता है। और हमें समाज में अधिक सकारात्मक योगदानकर्ता बनाएं। और इस प्रकार, परिणामस्वरूप, आम भलाई के लिए हमारी दुनिया को बदल दें। अब, ऐसे कल्पनाशील और जिम्मेदार ईसाई पढ़ने के लिए कौशल और कल्पना की आवश्यकता होती है, और चर्च और आराधनालय को इन व्याख्यात्मक गुणों को प्राप्त करने के लिए चुनौती देने और सशक्त बनाने की आवश्यकता है।

उदाहरण के लिए, बाइबिल में काव्यात्मक रूपक बेहद शक्तिशाली हैं, और उन्हें अच्छाई के लिए ताकत के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है या बुराई को बढ़ावा देने या उचित ठहराने के लिए दुरुपयोग किया जा सकता है। एक ओर, वे लाभकारी परिवर्तन एजेंट हो सकते हैं जिन्हें आम हित के लिए जिम्मेदारी और कुशलता से लागू किया जाता है। दूसरी ओर, सतही और कम सक्षम व्याख्याएं उन्हें नेक इरादे वाले ईसाइयों और यहूदियों को गुमराह करने वाले खतरनाक जाल में बदल सकती हैं और सामान्य सांस्कृतिक परिवेश में मौजूद संकीर्ण सोच और खतरनाक धारणाओं की पुष्टि कर सकती हैं।

ईसाइयों के लिए पुराने नियम के कानून की नैतिक प्रासंगिकता के एक महत्वपूर्ण अध्ययन में, उल्लेखनीय पुराने नियम के विद्वान गॉर्डन वेन्हम बताते हैं कि कानून विधायक के आदर्शों और व्यवहार में क्या लागू किया जा सकता है, के बीच एक व्यावहारिक समझौता होता है। कानून यह नहीं दिखाते कि सामाजिक रूप से क्या वांछनीय है, आदर्श तो दूर की बात है। वे न्यूनतम मानकों को लागू करते हैं और स्वीकार्य व्यवहार के लिए एक मंजिल तय करते हैं, नैतिक सीमा नहीं।

मैं उद्धृत करता हूँ कि वे कानून बनाने वालों के आदर्शों का खुलासा नहीं करते बल्कि केवल उनकी सहनशीलता की सीमा का खुलासा करते हैं। अंत उद्धरण. इसके विपरीत, मैं तर्क दूँगा कि बाइबल की कविता, जिसमें नीतिवचन की पुस्तक की कविता भी शामिल है, हमें आगे ला सकती है।

इसके सुंदर शब्दों और वाक्यांशों और इसके शक्तिशाली विचारों और भावनाओं और नैतिक चुनौतियों में, हम वास्तव में भगवान के लोगों के सपनों और आशाओं के सामने आते हैं। और पूर्ण, उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए भगवान के आदर्शों की एक झलक देखें जो गलत काम करने से बचने के बजाय सक्रिय रूप से सामान्य भलाई में योगदान करते हैं। अब मैं नीतिवचन की पुस्तक से एक विशेष मामले के अध्ययन की ओर बढ़ना चाहता हूँ।

यह अध्याय 3, छंद 9 से 10 में है। और यह समृद्धि के बारे में कविता है, नीतिवचन की पुस्तक में एक क्षेत्र और विषय जो बहुत प्रमुख है और जिस पर मैं बाद में हमारी श्रृंखला के बाद के

व्याख्यानों में से एक में वापस आऊंगा। लेकिन अब यहां, नीतिवचन 3, 9 से 10 में यह संक्षिप्त निर्देश है, जो अक्सर कई ईसाई परंपराओं में समृद्धि शिक्षण से जुड़ा हुआ है।

इसमें इस प्रकार लिखा है, अपनी संपत्ति से और अपनी सारी उपज के पहले फल से प्रभु का सम्मान करो। तब तेरे खलिहान बहुतायत से भर जाएंगे, और तेरे कुंड दाखमधु से भर जाएंगे। मैं बस इसे दोहराऊंगा ताकि इसे अंदर तक डूबने दिया जा सके।

अपनी संपत्ति से और अपनी सारी उपज के पहले फल से यहोवा का आदर करो। तब तेरे खलिहान बहुतायत से भर जाएंगे, और तेरे कुंड दाखमधु से भर जाएंगे। बेशक, ये दो छंद कई वर्षों, यहां तक कि दशकों से समृद्धि के सुसमाचार-प्रकार के उपदेश का मुख्य आधार रहे हैं।

एक सतही अध्ययन वास्तव में दो संबंधित विचारों का सुझाव देता है, एक सामान्य, दूसरा विशिष्ट। सबसे पहले, ये श्लोक यह सुझाव देते प्रतीत होते हैं कि भक्ति स्वतः ही धन की ओर ले जाती है। दूसरा, वे सुझाव देते प्रतीत होते हैं कि चर्च के काम या ईसाई मंत्रालय संगठनों को धन की उदार पेशकश देने से स्वचालित रूप से समृद्धि, विशेष रूप से वित्तीय पुरस्कार प्राप्त होते हैं।

व्यवहार में, इसके कारण अक्सर लोगों से तथाकथित दशमांश, उनकी वित्तीय आय का दसवां हिस्सा देने की मांग की जाती है। इस तरह के उपदेश नियमित रूप से वादों के साथ आते हैं कि वफादार और उदार, यहां तक कि बलिदान देने वाला दान अपेक्षाकृत गरीब लोगों को समृद्ध बना देगा। हालाँकि, वास्तव में यह वह नहीं है जो ये श्लोक कह रहे हैं, जैसा कि मैं एक क्षण में दिखाने का प्रयास करूँगा।

बल्कि, मैं बहस करना चाहता हूँ, और मुझे आशा है कि आप इसे एक मिनट में देख लेंगे, कि ये छंद अपेक्षाकृत गरीब लोगों को संबोधित नहीं हैं। इन्हें काफी विशिष्ट रूप से, बिल्कुल सीधे और स्पष्ट रूप से अमीर लोगों को संबोधित किया जाता है। श्लोक 10 स्पष्ट करता है कि उनके खलिहान, बहुवचन, और उनके कुंड, फिर से बहुवचन, क्षमता से अधिक भर जाएंगे।

इसलिए, केवल अपेक्षाकृत संपन्न लोगों के पास ही अपना खलिहान या टब होता है। जिनके पास कई खलिहान और कुंड हैं वे निश्चित रूप से धनी हैं। इसका अर्थ क्या है? गरीबों के लिए समृद्धि का सुसमाचार प्रदान करने के बजाय, ये छंद अमीरों के लिए एक वास्तविक सुसमाचार का निर्माण करते हैं।

जिनके पास पर्याप्त संपत्ति है, उनके पास अपनी नियमित आय रखने के लिए पहले से ही कई खलिहान और कुंड हैं, उन्हें दूसरों के प्रति उदार होकर अपने जीवन में भगवान को पहले स्थान पर रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस तरह के पुनर्निर्देशन और उदारता की प्रेरणा वादों में दी जाती है। खलिहान इस हद तक भर जाएंगे कि वे उमड़ने लगें, और शराब के डिब्बे फूटने लायक भर जाएंगे।

और ये वादे दो संबंधित लेकिन विशिष्ट सकारात्मक परिणामों का संकेत देते हैं। पहला परिणाम यह है कि परमेश्वर के कार्य के लिए कोई भी दान देने से दाता की संपत्ति कम नहीं होगी, बल्कि बढ़ेगी। खलिहान और हौद खाली या आधे भरे नहीं होंगे, वे पूरे भरे रहेंगे।

देने से देने वाला कम नहीं होगा। दूसरा परिणाम यह है कि ऐसा दान, इसके विपरीत, देने वाले को बिना किसी अतिरिक्त के अधिशेष के स्तर तक समृद्ध करता है। खलिहान और कुंड नहीं होंगे, क्षमा करें, इसलिए मुझे दोहराने दें, यह देने वाले को बिना किसी अतिरिक्त के अधिशेष के स्तर तक समृद्ध करता है।

अधिक खलिहानों और अधिक कुंडों को अधिक मकई और शराब से भरने का वादा नहीं किया गया है, बल्कि समृद्धि के वर्तमान स्तर से परे एक अतिप्रवाह का वादा किया गया है। मुझे शायद इस बिंदु पर यह जोड़ना चाहिए, इसका मतलब यह नहीं है कि उद्यमशील व्यवसायियों को अपने व्यवसाय का विस्तार करने का लक्ष्य नहीं रखना चाहिए। लेकिन मुद्दा यह है कि व्यवसाय का विस्तार अपने आप में एक अंत नहीं है, बल्कि भविष्य में और भी अधिक उदार बनने की क्षमता और अवसर प्राप्त करने का एक साधन है।

यह और अधिक विशिष्ट धन जमा करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह देने वाले को और अधिक उदार बनने में सक्षम बनाने के बारे में है। फिर एक कल्पनाशील व्याख्या जारी रहेगी और इस रहस्यमय प्रचुरता से सरलतापूर्वक प्रेरित होकर प्रश्न पूछेगी। उदार दाता को अपनी वास्तविक आवश्यकताओं से परे इस अतिरिक्त संपत्ति से क्या लेना-देना है? इस आश्चर्यजनक सलाह के काव्यात्मक डिज़ाइन में सरलता से अंतर्निहित स्पष्ट उत्तर यह है।

इसे दूर रखें! इससे प्रभु का आदर करो! उदार प्रचुरता उत्पन्न करने वाली प्रचुर उदारता के पुण्य चक्र को जारी रखें। किसी की अपनी समृद्धि के लिए नहीं, बल्कि उस हृदय की समृद्धि के लिए जो दूसरों को समृद्ध करके परमेश्वर की महिमा करता है। जैसा कि हम बाद के व्याख्यानों में देखेंगे, हिब्रू बाइबिल के पुराने नियम की कविता में आगे बढ़ने, ठीक करने, चुनौती देने और बदलने की शक्ति है।

इस कविता में हमने ज़रूरतें भी देखी हैं, ऐसी कविता को पढ़ने के लिए कौशल, कल्पना और ज्ञान की आवश्यकता होती है। ये व्याख्यात्मक गुण आसानी से नहीं आते। उन्हें कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और दृढ़ता की आवश्यकता है।

लेकिन व्याख्यात्मक कौशल में इस तरह के निवेश का फल प्रचुर और फायदेमंद होगा। वे हमारे लिए और आम भलाई के लिए सच्चा और स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं। शायद मैं यहाँ एक और चीज़ जोड़ना चाहता हूँ।

मैं यह व्याख्यान यह सुनिश्चित करने के प्रयास में दे रहा हूँ कि हमारे सभी श्रोता इस बात से अवगत हों कि यह आधुनिक दुनिया में ईसाइयों और यहूदियों दोनों के लिए प्रासंगिक है। लेकिन मैं, निश्चित रूप से, मेथोडिस्ट चर्च में एक नियुक्त पादरी होने और एक ईसाई मंदिर में पढ़ाने के नाते, एक ईसाई धर्मशास्त्री और एक ईसाई अकादमिक के रूप में भी बोलता हूँ। और अब मैं नीतिवचन की पुस्तक के बारे में इन व्याख्यानों में जो कुछ भी साझा कर रहा हूँ उसे एक बड़े

व्याख्यात्मक संदर्भ में रखना चाहता हूं कि हिब्रू बाइबिल, यहूदी हिब्रू बाइबिल और ईसाई ओल्ड टेस्टामेंट आज आधुनिक ईसाइयों के लिए क्या भूमिका निभाते हैं।

और एक हद तक, निःसंदेह, आज के आधुनिक यहूदी विश्वासियों के लिए भी। और मैं इन बयानों को कुछ हद तक उत्तेजक और जानबूझकर उकसाने वाले शीर्षक के तहत रखना चाहता हूं, लेकिन साथ ही यह कुछ हद तक चुटीले, हल्के-फुल्के, विनोदी बयान भी हैं। मेरे लिए, पुराना नियम ही नया नियम है।

मुझे फिर वही बात कहना है। पुराना नियम ही नया नियम है। उससे मेरा मतलब क्या है? खैर, नया नियम लगभग 100 वर्षों की अवधि में उन लोगों द्वारा लिखा गया था जो देहधारी यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानते थे या जो कम से कम ऐसे लोगों को जानते थे जिन्होंने यीशु को प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से जाना था।

उन सभी ने यीशु की आसन्न वापसी के परिप्रेक्ष्य से लिखा, जैसा कि सुसमाचार में संकेत दिया गया है, उदाहरण के लिए, मैथ्यू 16, श्लोक 28, या ल्यूक 9, श्लोक 27 में। इस दृष्टिकोण से, जो कुछ भी मायने रखता था वह आने वाला जीवन था, स्वर्ग में अनंत काल. जैसा कि पौलुस कुलुस्सियों 3, पद 2 में कहता है, अपना मन ऊपर की वस्तुओं पर लगाओ, न कि पृथ्वी पर की वस्तुओं पर, क्योंकि तुम मर चुके हो और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा है।

पुनरुत्थान के प्रकाश में, इस सांसारिक जीवन की चुनौतियाँ और अवसर परिधीय लग रहे थे। पॉल फिर से, मैं मानता हूं कि इस वर्तमान समय के कष्टों की तुलना उस महिमा से करने लायक नहीं है जो हमारे सामने प्रकट होने वाली है। रोमियों 8, पद 17.

तब, अधिकांश नए नियम, अपने पाठकों को स्वर्ग के लिए तैयार करने के लिए लिखे गए थे। यहां और अभी ईमानदारी से कैसे रहना है, इस पर मार्गदर्शन परिधीय था, क्योंकि हमारे पास कोई स्थायी शहर नहीं है, लेकिन हम उस शहर की तलाश कर रहे हैं जो आने वाला है। इब्रानियों 13, पद 14.

अब, इसके विपरीत, पुराना नियम, यीशु और शिष्यों की बाइबिल लगभग 1,000 वर्षों की समयावधि में लिखी गई थी। यह विश्वासियों के एक समुदाय द्वारा और उनके लिए लिखा गया था, जो अपने अस्तित्व के अधिकांश समय में, शक्तिशाली विरोधियों से घिरे हुए एक संकटग्रस्त अल्पसंख्यक थे। यह लोगों के आध्यात्मिक और शारीरिक दोषों और जीत के उतार-चढ़ाव का वर्णन करता है।

यह कई पीढ़ियों के दौरान असंख्य व्यक्तियों, महान नायकों और आस्था की नायिकाओं के संघर्ष और विजय की एक ज्वलंत तस्वीर पेश करता है। यह दैवीय आशीर्वाद पर खुशी के गीत और दैवीय न्याय पर पीड़ा के विलाप प्रस्तुत करता है। यह हमें गहरी भावनाओं और भय, सबसे बड़ी खुशियों और अंतर्दृष्टि, और नीतिवचन की पुस्तक के लेखकों जैसे महान विचारकों के नायाब ज्ञान की झलक प्रदान करता है।

संक्षेप में, पुराना नियम पूरे इतिहास में परमेश्वर के लोगों के विश्वास के जीवन का वर्णन करता है। और यहीं आधुनिक ईसाई आस्था और अभ्यास के लिए इसकी प्रासंगिकता निहित है। ईसाई चर्च लगभग 2,000 वर्षों से अस्तित्व में है।

अपने अधिकांश इतिहास में, यह प्राचीन इज़राइल की तरह संकटग्रस्त अल्पसंख्यक रहा है। हालाँकि यह लगभग 300 ईस्वी से 1900 ईस्वी तक यूरोप के लिए और 18वीं शताब्दी से लेकर आज तक उत्तरी अमेरिका के लिए सच नहीं है, ईसाई धर्म के अधिकांश इतिहास के लिए यह निश्चित रूप से दुनिया के अधिकांश हिस्सों के लिए सच है। यह आज पश्चिमी यूरोप के लिए सच है और यह अफ्रीका और एशिया के कई हिस्सों के लिए अभी भी सच है।

चर्च प्राचीन इज़राइल की तरह अद्भुत विजय और दुखद विफलताओं से गुज़रा है। चर्च ने प्राचीन इज़राइल की तरह मानवता में महान प्रगति की है। चर्च ने प्राचीन इज़राइल की तरह महान पाप किये हैं।

यह आधुनिक यहूदी धर्म के साथ मानवता के सबसे महान खजानों में से एक, हिब्रू बाइबिल, ओल्ड टेस्टामेंट, न्यू टेस्टामेंट को साझा करता है। चर्च के लिए, प्राचीन इज़राइल और आधुनिक यहूदी धर्म के लिए, पुराना नियम और विशेष रूप से इसकी कविता अच्छे जीवन जीने, अन्याय और पीड़ा के बीच जीवित रहने, मानव आत्म-प्रशंसा के बीच विनम्रता के लिए एक प्रेरणा है, और सामान्य हित की सेवा में जीवन बिताने के लिए। यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नुट हेम हैं।

यह सत्र संख्या पाँच है, नीतिवचन 1-9 से मुख्य अंश।